International Journal of Sanskrit Research 2014; 1(1): 29-30

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN Number: 2394-7519
IJSR 2014; 1(1): 29-30
© 2014 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 15-11-2014
Accepted: 18-12-2014

अनीता पाण्डेय
डा0 राम मनोहर लोहिया महाविद्यालय
महावीर छपरा गोरखपुर

Correspondence:
अनीता पाण्डेय
डा0 राम मनोहर लोहिया महाविद्यालय
महावीर छपरा गोरखपुर

श्रीकृष्ण चरितम् महाकव्य का उपजीव्य

अनीता पाण्डेय

प्रस्तावना

इस महाकव्य में श्रीकृष्ण के बाल लीलाओं का वर्णन बड़े ही सजीवता के साथ किया गया है। इस महाकाव्य की रचना श्रीमदभागवत महापुरण के आधार पर हुई है।

प्रस्तुत महाकव्य का उपजीव्य श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम् स्कन्ध में वर्णित भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीला है। श्रीमद्भागवत् महापुराण के दशम् स्कन्ध के प्रथम चौदह अध्यायों में भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीला का वर्ण किया गया है। श्री कृष्ण चरितामृतम् महाकाव्य के रचियता कृष्ण प्रसाद शर्मा घिमिरे जी ने अपने जीवन से सम्बंधी सभी गतिविधियों को ''गतिविधियों की रूपरेखाए'' नाम हिन्दी ग्रन्थ में वर्णित किया है। उस ग्रन्थ में उन्होनें श्रीकृष्ण चरितामृतम् महाकाव्य लिखे जाने के सम्बंध में विस्तार से चर्चा की है। उन्होंने लिखा है कि जब मेरे हृदय में संस्कृत, महाकाव्य लिखने की इच्छा जाग्रत हुई तो मै तर्क वितर्क करने लगा कि मैं किस विषय पर महाकाव्य लिखूँ किन–किन को पात्र बनाऊँ, कैसे छपवाऊँ। मैं इस ऊहा–पोह में आन्दोलित हो रहा था कि उसी बीच भगवान् शिव मेरे ध्यान में आकर मुझसे बोले कि जैसे तुमने स्तृति कुसुमांजलि काव्य के माध्य से मेरी स्तुति की है ठीक वैसा ही स्तुति परक काव्य संस्कृत भाषा में तुम भी लिखों। आवश्यकता पड़ने पर मेरी भी याद करते हुए तुम आगे बढ़ों तो अवश्य सफल हो सकोगे।

भगवान् शिव की कृपा से मेरा हृदय गद–गद हो उठा और प्रातः काल उठकर षोडश कला सम्पन्न चरमपूर्ण–परमतत्व उस सच्चिदानन्दधन निर्गुण ब्रहा को अपना सर्वोच्च लक्ष्य बनाकर ''कृष्ण भगवान् स्वयम्'' इस उक्ति के आधार पर उसी को सगुणरूपधारी महालीला विनोदी तथा संसार वृन्दावन बिहारी मानकर वैसे ही महापुरूषों के सदुपदेश को उपर्युक्त ढंग से अपना सन्मार्ग दर्शक समझकर जगद्गुरू कहे जाने वाले उन्ही आशुतोष प्रभु लोक शंकर शंकर को ''मान न मान मै तेरा मेहमान'' के अनुसार अपने सदगुरू के रूवरूप में निन्तर सद्विचारोत्पादक तथा अविच्छिन्न संस्कृत वाग्धारा प्रवाहक आद्यन्त विहीन, अपरिमित एवं सद्यः स्रोतः प्रसावक ठानकर मेरे इस संस्कृत काव्य लेखन सत्कर्म में जब वे ही मुझे यानी मुझे जैसे अयोग्य व्यक्ति को भी इस तरह प्रेरित कर रहे हैं तो वे ही इसको निमित्त रूप मुझसे परिपूर्ण करायेगें ही, ऐसी व्यवसायातिम का सद्बुद्धि को अपने आगे रखकर तथा संस्कृत महाकवि जगद्वर भट्देव का वही'' आश्वासन भयभ्याकुलतामृतानाम्'' इत्यादि श्लोक को सदुच्चरित कर '' श्रीकृष्ण चरितामृतम्'' नाम रखता हुआ यथार्थ नामक संस्कृत महाकव्य का यथार्थन्तथ्य –निर्देशक सर्वदा तथा सवर्था स्मरणीय मननीय एवं निदिध्यासननननीय, गेय, ध्येय, निम्नांकित द्वादशाक्षराश्रित औपजातिक पद्यमें सद्वस्तु स्थिति निर्देशनात्मक मंगलाचरणगर्भक इस श्लोक को लिख ही तो बैठो–

असीमित सद्गुरूशक्ति समितिं कृष्णात्मकं विश्वकटाहगंहः।
गुरोश्चिदानन्दमयाच्छावात् सतः पूर्ण स्वशक्त्यात्र रिाजतेतराम्।।

इस प्रथम श्लोक की रचना करने पर मुझे वर्णनानीत आत्मिक –तृप्ति मिली। मानो अत्यन्त क्षुधित व्यक्ति को सुधामयी मिष्ठान राशि मिला हो। कौड़ी–कौड़ी के लिए परमुखापेक्षी किसी दरिद्र को धनराशि प्राप्त हुई हो। तब मै वारम्बार उसी को दुहराने लगा होते–होते मैने इसी श्लोक को अपना सब कुछ समझकर काव्यगत मुख्य विषय बनाकर आगे करने का विचार भी सुदृढ़ बनाया। अपने लक्ष्यभूत एवं प्राप्तव्य वस्तु विशेष काव्यनायक भगवान् श्रीकष्ण को जो साक्षात् परवहा है, सर्वोपरि मानकर जगद्गुरू शंकर को अपना सर्वसिद्धिप्रद गुरूदेव समझकर उन्ही से अपने हृदय में आविभावित भावों को संस्कृत शब्दों में परिवर्तित कर धीरे–धीरे मधुकरी वृत्ति को अपनाता हुआ उसी महाकाव्य के श्लोकों के रूप में उमारता गया।

उन्होनें गतिविधियों की रूप रेखाएं ग्रन्थ में ही पृष्ठ संख्या 341 पर लिखा है कि जब मै श्रीकृष्ण चरितामृतम की रचना कर रहा था उस समय मेरा विचार था कि श्रीमद्भावत् के आधार पर श्री कृष्ण चरित्र को परिपूर्ण रूप में सर्वतो मद्रमय विषय विन्यासित बनाकर इस काव्य को ढाई सौ वर्ग का गनाकर चार खण्डों में प्रकाशित कराऊँगा।

कवि के संकल्प के अनुसार प्रस्तुत महाकाव्य उनकी वृहद् योजना का सर्ग में कविरत्तन श्री घिमिरे जी ने स्पष्ट रूप से उल्लिखित किया है कि श्री कृष्ण द्वैपायन व्यास जी ने समस्त वाडमय का मन्थन करके जिस श्रीमद भागवत में श्रीकृष्ण मय सार तत्व को उद्धृत किया है उसी का सहारा लेकर मैं श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र का दिग्दर्शन करा रहा हूँ–

तस्मादहं तद्विभुकृष्ण जीवनं निर्दर्शये भागवताऽऽश्रयं श्रयन्।
द्वैपायनेनाऽत्र समस्तवाड्मयं निमथ्य कृष्णात्मकसार उद्धतः।।2

महाकाव्य के चतुर्थ सर्ग में भी उन्होंने स्पष्ट किया है कि श्री भगवान कृष्ण चन्द्र के चरित्र का जो मनोरम वर्णन श्रीमद्भागवत में जो दृष्टिगोचर होता है केवल उसी का आश्रय लेकर मै इस काव्य में उक्त लीला का विशेष रूप से वर्णन करूँगा। उत्तम और सुन्दर होने पर भी मैने अन्य ग्रन्थों से कुछ भी नही ग्रहण किया है।

तदत्र श्रीकृष्णचरित्र वर्णन यद्दृश्यते भागवते मनोरमम्।
मया समाश्रित्य तदेव केवलं विवर्ण्यते नान्यते उत्तम ह्यपि।।

श्रीमद् भागवत महापुराण में वर्णित श्रीकृष्ण की बाल लीला

इस महापुराण केदशम् स्कन्ध के प्रारम्भिक चौदह अध्यायों में श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर अधासुर के बध तक की श्रीकृष्ण लीला वर्णित है। यहॉ तक की लीलाओं को बाल लीलाओं का नाम दिया गया है। दशमस्कन्ध के चौदहवें अध्याय के अन्तिम श्लोक में व्यास जी ने स्पष्ट किया है कि श्रीकृष्ण और बलराम जी ने कुमारावस्था के अनुरूप ऑख मिचौनी, श्वेतु बन्धन और बन्दरों की भॉति उछलना कूदना, आदि अनेक लीलाएँ करके अपनी कुमारावस्था का त्याण किया।

एवं विहारैः कौमारैः कौमारं जहतुर्व्रजे।
निलायनैः सेतुबन्धैर्मर्कटोत्पल्वनादिभिः।।4

व्यास जी के स्पष्ट उद्घोष के कारण यहॉ तक की लीलाओं को बाल लाला कहा गया। पृथ्वी पर पापियों की संख्या अत्यधिक होकर गो ब्रामण साधु संत लोग उनसे पीड़ित होने लगे थे। पापियों की अत्यधिक संख्या बढने के कारण निन्तर बोझिल हो जा रही थी ऐसी स्थिति में माता पृथ्वी ने सृष्टिकर्ता भगवान् ब्रहमा से निवेदन किया कि मै इन पापियों को ढोने में सर्वथा असमर्थ हूँ। अतः कृपा करके आप उनके विनाश के लिए उपाय ढूँढ निकाले जिससे मेरी पीड़ा दूर हो सकें।

माता पृथ्वी के इस निवेदन को सुनकर ब्रहमा जीने पृथ्वी की पीड़ा का उल्लेख विश्वरक्षक भगवान नायण से किया। नायाण ने यदि ऐसी बात है तो मै शीघ्र ही पृथ्वी परजन्म लूँगा। क्योंकि यह प्रतिज्ञा ही है, जब –जब धर्म की हानि होगी अधर्म बढ़ने लगेगा उस समय मै वहां अवतरित होकर पापियों का विनाश करूँगा। यह मरी प्रतिज्ञा ही है जब–जब धर्म पर आक्रमण होगा और अर्धम बढ़ने लगेगा तब–तब वहॉ मै अवतरित हो जाऊँगा और शत्रुओं का विनाश करूँगा। ब्रहमा जी को इस प्रकार आवश्वस्त कर विश्चित होने की गत कही। तत्पश्चात् भगवान विष्णु माता देवकी के गर्भ से अवततिर हुए।

निस्कर्ष–श्रीकृष्ण चरितामृतम् महाकाव्य साहित्य शास्तीय अनेक विशेषताओं से युक्त है योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण की अपूर्व बाल्य कालिक लीलाओं ने एक अपूर्व प्रभाव इसमें दिखाया गया है। विश्व सृष्टि के सूत्र धार ब्रहमा जी जिस अपूर्व बालक के नवीन बछड़े एवं ग्वाल बालों की निर्माण की शाक्ति को देखकर उनका आश्चर्य चकित होना, तत्पश्चात् उनके चरणो में नत मस्तक होकर अपूर्व बालक की भाव पूर्ण स्तृति करना काव्य की महन्ता को स्पष्ट कर्मा है।